"हमारे अंदर अज्ञान से जमे हिमखंड को
तोड़ने के लिए पुस्तक एक कुठार है।" -काफ्का

समीक्षा,संवाद और सूचनाओं की

साहित्य नंदिनी

वर्ष–7, अंक–3, मार्च 2025 www.abhinavimroz.com RNI No. DELHIN/2017/74713/19-02-18

जश्न-ए-'अमीरन'

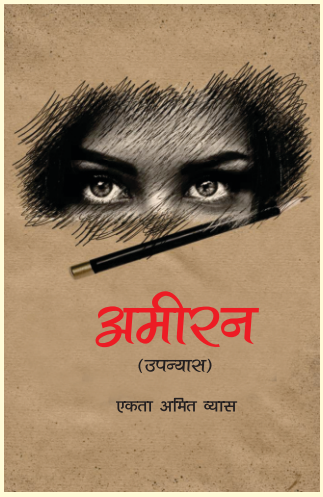

'अमीरन' ने इसी माह मई में एक वर्ष का सफ़र तय कर लिया है। इस शुभ अवसर पर लेखिका एकता अमित व्यास की दूसरी पुस्तक 'गांधीधाम डायरीज...' भी इसी महीने में प्रकाशित हो गई है। बधाई एवं शुभकामनाएं:-

एकता अमित व्यास की नवीनतम रचना

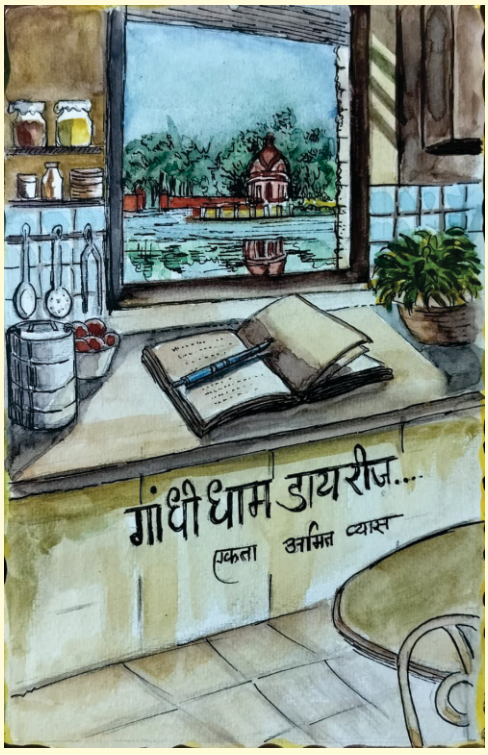

The very first and latest introduction of Jiya Vyas to the English Litrature

Following my mother's path

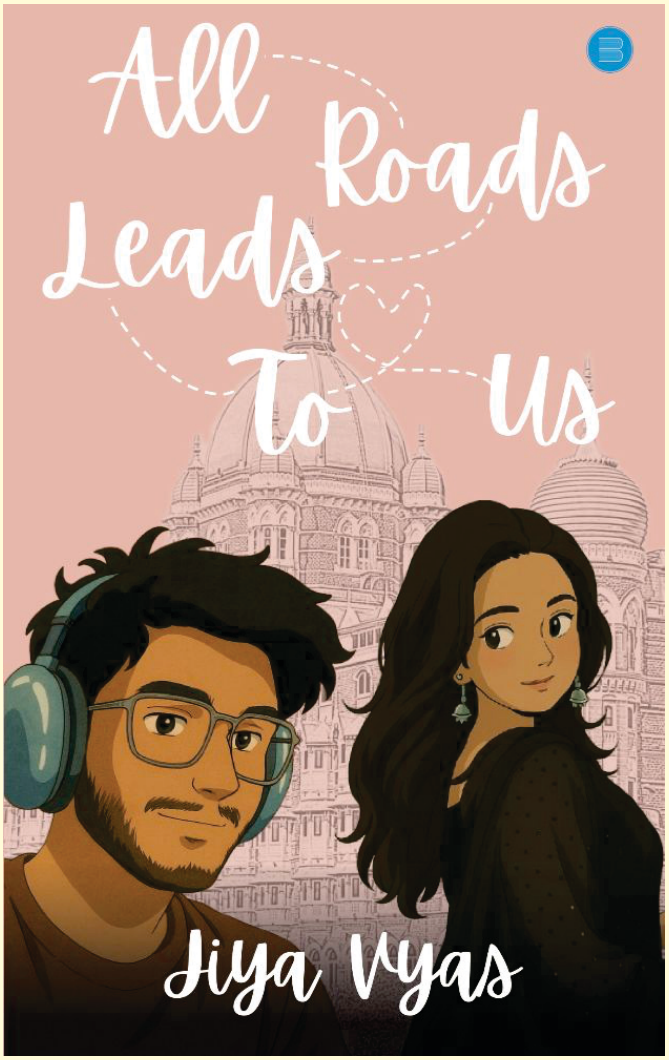

Jiya is a passionate author who tries to weave emotions, relationships, and personal growth into her narratives. With tales of hopeless romantics sprinkled across her teenage years, she has always been drawn to the power of words and their ability to shape stories.

Her love for contemporary romance and character-driven stories inspired her to write "All Roads Leads to Us"—a heartfelt journey of love, ambition, and self-discovery. Through her writing, she explores the complexities of human emotions, the beauty of friendships, and the magic of love that finds us when we least expect it.

When she's not writing, Jiya can be found indulged in conversations, lost in a book, or brainstorming her next story. She believes that every person has a tale worth telling and hopes her stories resonate with readers, making them feel seen, understood, and inspired.

You can connect with her on her Instagram handle: @jiyaaa.28_

BlueRose ONE
Stories Matter
New Delhi • London

INR 000

GENRE

www.BlueRoseOne.com

संपर्क :
संपादक : देवेन्द्र कुमार बहल, बी-3/3223, वसंतकुंज, नई दिल्ली 110070
मो. 9910497972 ई–मेल : abhinavimroz@gmail.com

समीक्षा

पारिवारिक परिवेश को बचाने की जागरूक कोशिश है: 'अमीरन'

डॉ. हरेराम पाठक

एकता अमित व्यास हिंदी उपन्यास लेखन के क्षेत्र नया-नया पदार्पण की हैं। पर उपन्यास की भाषा - शैली उन्हें कतई नई नहीं बल्कि एक प्रौढ़ लेखिका का रेखाचित्र प्रस्तुत करती है। आलोच्य उपन्यास में कहीं भी अनावश्यक विस्तार नहीं है, न भाषा - शैली में जटिलता ही है। सहज स्वाभाविक रूप से आगे बढ़ती हुई कहानी अपने उद्देश्य से कहीं भी विचलित नहीं होती है। विवेच्य उपन्यास की केंद्रीय वस्तु है, परिवार में पति- पत्नी के अतिरिक्त एक तीसरी स्त्री का दखल होना। जब कोई स्त्री साजिश रचती हुई पति - पत्नी के सुखमय जीवन में प्रवेश कर पति को प्रेम के नाम पर उसकी पत्नी से अलग करने की चाल चलने लगती है तो इससे वह स्वयं तो बदनाम होती ही है, एक सम्पन्न एवं खुशहाल परिवार की खुशियों में भी आग लगा देती है।

अमीरन इस उपन्यास की केंद्रीय पात्र है। लेखिका एक पार्क में अमीरन से मिलती है। वह उसके व्यक्तित्व से खूब प्रभावित होती है। दोनों में आत्मीयता बढ़ती है और अमीरन अपने जीवन में घटित घटनाओं को लेखिका से बताती हैं। अमीरन की बेटी है सिया। उसे ट्यूशन पढ़ाने के लिए दिव्या मैम आती हैं। पर ट्यूशन तो एक बहाना है, उसी बहाने दिव्या मैम अमीरन के घर में अपनी पैठ बनाने लगती है। छोटी बच्ची सिया को ट्यूशन पूरी होने के बाद भी वह कभी मंदिर लेकर जाती है, कभी कहीं, तो कभी चॉकलेट लाकर देती है। ट्यूशन के बाद भी वह किसी न किसी बहाने घर में रुकी रहती है। अमीरन के पति आकाश के घर आने तक वे प्रायः वहीं रुकी रहती है, जब आकाश उससे कहते हैं कि आप शाम का खाना खाकर ही जाइए तो वह रुक जाती है और खाना खाकर ही जाती है। इस प्रकार आकाश और दिव्या मैम के बीच नजदीकियाँ बढ़ने लगती हैं। अब अमीरन का काम घर में मात्र इतना ही रह गया था कि वह खाना बनाती और दिव्या मैम को खिलाती। धीरे-धीरे दिव्या मैम घर और सिया पर एकछत्र राज्य करने लगती है। दिव्या मैम सबको अपने प्रभाव में ले चुकी थी। अमीरन को लगने लगता है कि शायद वह अपने परिवार को अब बचा नहीं पाएगी। इसी बीच दिव्या मैम अपना स्कूल छोड़कर अहमदाबाद चली जाती हैं। अपने स्कूल की छुट्टियाँ बिताने के लिए सिया भी उनके पास हो लेती है, आकाश पहुँचाने जाते हैं और वहाँ से विदेश चले जाते हैं। अमीरन को ऐसा लगता है जैसे वह अपने पति आकाश से भी दूर होती जा रही है। आकाश भी कोई काम करते वक्त उससे परामर्श नहीं लेते। अमीरन की छोटी ननद को जब मालूम होता है कि वह (अमीरन) अपनी बेटी को किसी अनजान व्यक्ति के यहां रख दी है तो उसे काफी आश्चर्य होता है और वह अमीरन पर तंज भी कसती है। इसी क्रम में सिया का जन्मदिन आ जाता है। सिया की इच्छा है कि उसका जन्मदिन दिव्या मैम के घर अहमदाबाद में ही मनाया जाए इसलिए अपनी मम्मी - पापा को वह अहमदाबाद ही बुला लेती है। दोनों वहां पहुंच कर सिया का जन्मदिन मनाते हैं। रात में सिया अमीरन की गोद में सोती है। अमीरन अपार सुख का अनुभव करती है जैसे कितने वर्षों बाद वह अपनी बेटी से मिली हो। सिया अमीरन के साथ अपने घर लौट आने के लिए राजी हो जाती है।

एकता अमित व्यास

यह कहानी केवल अमीरन की कहानी नहीं है बल्कि उन तमाम औरतों/ माताओं की कहानी है जिनके दाम्पत्य जीवन में कोई दूसरी औरत प्रवेश कर पति और बच्चे का मानसिक ब्लैक मेलिंग करना शुरू कर देती है। बच्चों में उनकी मम्मी के प्रति इतनी नफरत भर देती हैं कि अपनी मम्मी से बच्चा अलग हो जाता है। दूसरी ओर बच्चे के पिता को अधिक आदर एवं प्रतिष्ठा देकर वह यह जताने लगती है कि उसकी हरेक बात का ध्यान वह अच्छी तरह रख रही है। पुरुष की हंटिंग करने वाली ऐसी स्त्रियां दूसरे परिवार के आपसी वातावरण में खूब ज़हर घोलती हैं। परिणाम यह होता है कि एक अच्छा और आदर्श परिवार बिखरकर अवसाद का शिकार हो जाता है। दिव्या मैम सिया को उसकी माँ के प्रति दुराव पैदा करने में न जाने कितने हथकंडे अपनाती हैं,

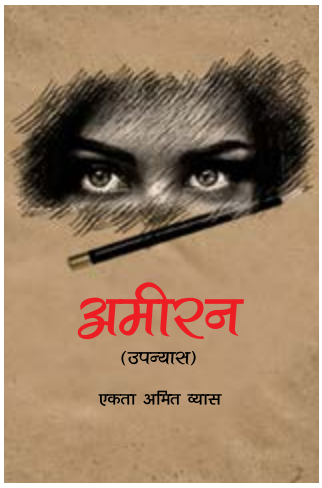

दिव्या मैम की इन बातों से यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है - " धीरे - धीरे सिया ने बताया कि दिव्या उसे बहुत प्यार से रखती है। किसी भी चीज के लिए मना नहीं करती और साथ ही यह भी कहती है, तुम्हारी मम्मी बहुत गुस्से वाली है। वो तुम्हारे साथ खेलती भी नहीं, हर चीज़ के लिए वो तुम्हें मना कर देती हैं, देखो मैं तुमको सब कुछ खरीद कर देती हूं, यहां तुम्हारे पास भाई भी है। इसलिए तुम यहीं पर रहो। "

जब किसी दूसरे के पति को छिनना होता है तो वह स्त्री सबसे पहले उसके बच्चे को अपने वश में करती है। अपना अटूट प्यार वह बच्चे पर उड़ेलती है। बच्चे के मनोविज्ञान से अच्छी तरह परिचित हो जाने के बाद धीरे - धीरे वह स्त्री उसके पिता का दिल जीतने के लिए प्रयासरत हो जाती है। अब दिव्या बहुत दूर तक अमीरन की बेटी और उसके पति को अपने चंगुल में ले राखी थी। ऐसी स्थिति में अमीरन अपनी बेटी और पति को दिव्या की जाल से कैसे मुक्त कराती है, यह प्रसंग उन स्त्रियों के लिए अनुकरणीय बन जाता है जो दैनिक जीवन में दिव्या जैसी स्त्रियों के मायाजाल के चलते पारिवारिक बरबादी के कगार पर पहुँच जाती हैं। अमीरन एक जागरूक स्त्री है। वह दिव्या की हरेक गतिविधि पर ध्यान रखती है। उतना ही अपने पति आकाश पर भी ध्यान रखती है। कहती है– " मैं देख रही हूं, मैडम को आप बहुत ज़्यादा पसंद करते हैं। उनके परिवार के प्रति विशेष लगाव भी है, पर वे लोग जैसे दिखाई देते हैं, वैसे हैं नहीं। संभल जाएँ नहीं तो मुसीबत में पड़ जाएंगे। कम बोलने वाले आकाश ने उस दिन भी यही जवाब दिया, ऐसी कोई बात नहीं है, वो ईमानदार और भगवान को मानने वाले लोग हैं, तुम चिंता मत करो। " यह सत्य है कि एक स्त्री किसी दूसरी स्त्री को जितनी सूक्ष्मता से पहचानती है, पुरुष उतनी सूक्ष्मता से नहीं पहचान पाता है। पुरुष उसके बाहरी आवरण में फंसकर रह जाता है, वह उसके भीतर प्रवेश नहीं कर पाता, इसीलिए वह धोखा खा जाता है। कोई भी स्त्री इस राज को अच्छी तरह समझती है। अमीरन के साथ भी यही बात है। वह दिव्या मैम की जाल में फंसते चले जाते हुए अपने पति को सावधान करती है। आकाश भी समझ जाते हैं कि अमीरन के आँख में धूल झोंकना इतना आसान नहीं है। पति- पत्नी के बीच चलने वाले इस बातचीत के क्रम से यह शिक्षा मिलती है कि कोई भी पत्नी अपने पति को दूसरी स्त्री के चंगुल में फंसते हुए देखे तो उसे तुरत अपने पति को सावधान कर देना चाहिए। नहीं तो एक ऐसा समय भी आ सकता है जब समझने - समझाने का अवसर हाथ से निकल गया होता है।

समय - समय पर रखी जाने वाली प्यार भरी निगरानी से सिया और आकाश दोनों दिव्या के प्रभाव से बाहर निकल आते हैं। अमीरन छुट्टियाँ बिताने के दौरान आर्ट ऑफ लिविंग के वासद आश्रम में एक हफ्ते के लिए जाने की योजना बनाती है। इस कार्यक्रम में सिखाई जाने वाली सुदर्शन क्रिया, सांस लेने की प्रक्रियाओं द्वारा मन के नकारात्मक भावों को दूर करने की क्रिया आदि योगासन की विभिन्न मानसिक एवं शारीरिक प्रक्रियाओं द्वारा बहुत सारी व्यक्तिगत समस्याएं सुलझने लगती हैं। एक हफ्ते के कोर्स में सिया और अमीरन को बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। सिया को दिव्या के घर आने - जाने में अब ज्यादा दिलचस्पी नहीं रह गई थी। डूबते परिवार को हर तरह उबारने के लिए अमीरन अपना जी - जान लगा रही थी। आकाश और दिव्या का प्रेम प्रसंग लोगों में प्रसारित होने लगा था। अमीरन चिंता और अवसाद के महा समंदर में डूबती - उतराती अपनी पारिवारिक जीवन - नौका को किनारे लगाने की पुरजोर कोशिश कर रही थी। आकाश से सवाल - जवाब होने लगे थे। अंततः अमीरन अपने आँसुओं के सैलाब को रोक न पाने की अवस्था में योगगुरु का सहारा लेती है। मन को अवसाद के घेरे से हटाना कितना कठिन है, अब वह समझने लगी है। वह यह भी समझने लगी है कि योग और अध्यात्म भी तभी सहायक हो सकते हैं जब कि संघर्ष और निर्णय लेने की क्षमता का विकास मानव अपने अंदर कर ले। गुरु भी वही शिक्षा देते हैं - "डट कर मुकाबला करो। मतलब इस संसार में बिन पुरुषार्थ किए कुछ भी नहीं मिलता। हमें सतत् संघर्षरत होना पड़ता है। " संघर्ष ही जीवन है। संघर्ष जीवन को गति देता है। अपने अवसाद (डिप्रेशन) को मिटाने के लिए आप योगगुरु के पास जाएँ या किसी मनोचिकित्सक के पास आखिर अपने द्वारा निर्मित उस अवसाद से निजात पाने के लिए खुद ही प्रयास करना पड़ेगा। डिप्रेशन की जड़ को समझकर उसे उखाड़ फेंकने के लिए संकल्प लेना होगा और तदनुरूप संघर्ष करना होगा। मनोचिकित्सक ने भी अमीरन को यही सलाह दी थी। काफी मशक्कत के बाद अमीरन अपनी बेटी और और पति आकाश को दिव्या के मोह - पाश से मुक्त करा पाई थी पर एकबार जब दिल टूटता है तो उसके जुड़ने पर भी जो गाँठ पड़ जाती है वह कभी सामान्य नहीं हो पाती। लेकिन अमीरन और आकाश के बीच जो गाँठ बन गई थी वह सामान्य होनी आरम्भ हो चुकी थीं।

'अमीरन' उपन्यास एक सामाजिक उपन्यास है, एक समस्यामूलक उपन्यास भी है और एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास भी। इन तीनों के सामंजस्य से जिस औपन्यासिक कला का विकास हुआ है उसमें भाषा - शैली की महती भूमिका कही जा सकती है। उपन्यास की भाषा - शैली गहन मनोवैज्ञानिक तथ्यों को भी बहुत सहजता से प्रस्तुत कर देती है। अपने उद्देश्य एवं संदेश में यह उपन्यास इक्कीसवीं सदी के सफल उपन्यासों में प्रमुख रूप से अपनी पहचान बनाता है। **–नई दिल्ली, मो. 7086874126**

समीक्षा

अमीरन - स्त्री मन और हमारे समय से सरोकार रखती कृति

प्रो. रवि कुमार मिश्र

साहित्य की प्रत्येक विधा की अपनी एक गरिमा होती है । रचनाकार से यह अपेक्षा होती है कि वह उस विद्या की गरिमा को बिना ठेस पहुंचाये उस विधा की अपेक्षा के अनुरूप स्वयं की अनुभूतियों को अभिव्यक्त कर सके । यह ध्यान रखने की बात है कि विधा और अभिव्यक्ति प्रायः अन्तसम्बन्धित होते हैं । जो बात उपन्यास में कही जा सकती है, वह कहानी या कविता में नहीं कही जा सकती है । इन बिंदुओं को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है कि एकता अमित व्यास के उपन्यास अमीरन को पढ़ते समय हमें एक सुखद अनुभूति होती है । करीब डेढ़ सौ पृष्ठ का यह उपन्यास समकालीन दौर का उपन्यास है । इस उपन्यास में प्रेम, जीविका, समकालीन परिवार, दामपत्य जीवन, विवाह और विवाहेत्तर सम्बन्ध, सामाजिक मूल्यों की बहुलता और संकट, तीव्र प्रवास और व्यावसायिक गतिशीलता, तीव्र नगरीकरण से उपजी अपार्टमेण्ट की संस्कृति और राजनीति, शिक्षा का निजीकरण, समाज में बढ़ती महात्वाकांक्षा और उपलब्धि की ललक, आध्यात्मिक मंच के उभार, सोशल मीडिया जनित दौर, आदि विविध विषयों को सहज ढंग से प्रस्तुत किया गया है । इस कृति में सामाजिक-सांस्कृतिक पहलूओं की प्रासंगिक विवेचना के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक पहलू को भी समझने का प्रयास किया गया है । उपन्यास में दो-तीन प्रमुख स्त्री पात्रों के माध्यम से उच्च मध्यम वर्गीय दामपत्य जीवन और उसके संकट को केन्द्र बनाकर प्रेम, आकर्षण, विचलन आदि को केन्द्रीय विमर्श के रूप में रखा गया है । हमारे दौर के अन्य विमर्श भी इसके साथ-साथ चलते हैं । रचनाकार ने हमारे समय के साथ संवाद का बेहतर प्रयास किया है । समाजशास्त्री निकी हार्ट ने एक ही छत के नीचे रहने वाले दम्पत्ति जिनके मध्य दामपत्य सम्बन्ध इस हद तक बिखर गया है कि वह आपस में किसी तरह के औपचारिक संवाद भी नहीं करते है, के लिए इम्पटी शेल मैरिज की शब्दावली का प्रयोग किया है । समाज में पति-पत्नी के रूप में पहचाना जाना और वास्तविकता में एक दूसरे के लिए लगातार अजनबी बनते जाना भी हमारे 'समय और आस-पास का सीमित स्थान छेकंता हुआ यथार्थ है । अमीरन एक व्यक्ति है. अमीरन एक प्रवृत्ति है की बहस को लेकर आगे बढा जाये तो यह कहा जा सकता है कि इन कहीं तो वह इन दोनों के मध्य है और कहीं द्रष्टा भाव संपन्न भी है जो इन दोनों में या इन दोनों के मध्य कहीं नहीं है । अमीरन के माध्यम से एकता अमित व्यास ने बहुत कुछ अपने पाठकों के लिए संजोया है । यह कृति एक परिपक्व नारीमन की रचना है । अतः इसमें उस तरह का कोई नकारात्मक आग्रह नहीं है जो किसी वाद से सम्बद्ध होकर यथार्थ का मनमाफिक चयनात्मक चित्रण होता है । यह सुखद है ।

एकता अमित व्यास

इस उपन्यास में हमारी भेंट उस नारी से होती है जो स्त्रियोचित्त सौदर्य और उर्जा के साथ सफल दामपत्य जीवन को जी रही होती है । सामाजिक स्तरीकरण की दृष्टि से वह उच्च मध्यमवर्गीय परिवार की स्त्री है । उसके पति आकाश के जीवन में उसकी लड़की सिया की विद्यालय की शिक्षिका दिव्या का आगमन वह घटना है । जिससे कहानी आगे बढती है । दिव्या धीरे-धीरे आकाश के घर और जीवन में दृढता के साथ अपना स्थान बनाती चली जाती है और सहज शांत सी आकाश की पत्नी यानि अमीरन को इसका मान बहुत बाद में होता है । जब उसे यथार्थबोध सा होता है तो वह एक साथ स्वयं के अन्तर्जगत और वाहय जगत को खंगालने का प्रयास करती है । वह उस अधूरेपन को जानना और समझना चाहती है जो कि अभिव्यक्ति के विविध माध्यमों ने एक व्यायत के रूप में जाना जाता है । यहां कुछ विचारणीय हो जाता है । क्या यह अधूरापन वास्तविक होता है अथवा यह हमारी मनोदशा द्वारा निर्मित यथार्थ होता है, यह अधूरापन कब उभरता है विवाह के आरम्भिक दौर में अथवा रिश्तों की एक लम्बी उम्र गुजरने के बाद, क्या उम्र परिपक्वता का वास्तविक निर्धारक हो सकता है,

इत्यादि। इसका निर्धारण आसान नहीं होता है। लेखिका ने एक प्रश्न यह भी उठाया है कि इस तरह के रिश्ते क्यों पनपते हैं, क्यों आकार लेते हैं और सबसे बढ़कर उनकी परिणति जानी-पहचानी सी ही क्यों होती है? एक महत्वपूर्ण विचारणीय विषय यह भी है कि क्या हमारी भौतिक महात्वाकांक्षाएं इतनी शक्तिशाली होती जा रही है कि वह स्थापित मूल्यों और मानकों को निगलने का प्रयास करते समय किसी भी तरह की हिचक नहीं महसूस करती हैं। दिव्या के चरित्र के माध्यम से एकता अमित व्यास ने इस पर भी चिंतन को बाध्य किया है। आकाश के नज़रिये से देखा जाये तो वह अपनी प्रतिबद्धता और सरोकार को त्यागकर विचलन की राह क्यों पकड़ लेता है। इस विचलन को हम कौन सी संज्ञा दें, प्रश्न यह भी है। यह प्रेम है, वासना है, मैनिपुलेशन है। दुविधा सुलझती भी है, बढ़ती भी है। इसका कारण यह है कि सब कुछ दिव्या की वजह से ही नहीं है, उसके परिवार की वजह से भी है। क्या आकाश आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं होता तो क्या दिव्या ऐसा करती और क्या अगर वह चाहती तो भी आकाश का व्यवहार वैसा ही होता, यह जानना भी दिलचस्प होगा। क्या दिव्या को ही अकेले जवाबदेह ठहराया जा सकता है. आकाश को नहीं अगर यही दृष्टिकोण समाज में स्थापित हो रहा है तो क्या हम एक बेहतर समाज की तरफ बढ़ रहे हैं ? लेखिका ने बहुत ही संजीदगी से विविध तरह के प्रश्नों को सामान्य और दार्शनिक शैली में एकसाथ स्पर्श किया है।

अपार्टमेण्ट की संस्कृति, प्रवास, व्यावसायिक गतिशीलता किस तरह से हमारे सामाजिक जीवन को प्रभावित कर रहे हैं. इसे भी इस कृति में स्पष्ट किया गया है। आकाश जैसे पति की पत्नी एक साथ उपहास और सहानुभूति का पात्र अगर बनती है तो क्या इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि हम एक विचित्र तरह की प्रतिक्रिया और प्रतयुत्तर को एक साथ जीने लगे हैं। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षिका जब मूल्य विहीन आचरण स्वयं कर रही है तो क्या यह मूल्यों का विघटन नहीं है। अगर आकाश और उसकी पत्नी के मध्य एक तरह का अधूरापन या खालीपन है तो उसकी वजह कहाँ ढूँढी जानी चाहिए और हम कहाँ ढूँढते हैं. इस पर भी इस कृति में चर्चा की गई है। नकारात्मक सहसम्बन्ध की शब्दावली से हम यह कह सकते हैं दिव्या का घर में मज़बूत होना और आकाश की पत्नी का घर में लगातार कमज़ोर होना किस बात का संकेत है। क्या आधुनिक परिवार को इन स्थितियों से अनिवार्य रूप से गुज़रना ही होगा, यह घटना है या प्रवृत्ति है, इस पर भी विचार करने की आवश्यकता है। किसी की भावुकता को प्रेम और स्नेह से हटकर आर्थिक रूप से भुनाने की घटनाएँ अगर समाज में बढ़ी हैं तो क्या यह इस बात का द्योतक नहीं है कि इन कोमल भावनाओं को भी बाजार ने अपने गिरफ्त में ले लिया है। इस कृति में समकालीन उच्च मध्यमवर्गीय परिवार की एक घटना के साथ-साथ विविध विमर्श को भी स्थान दिया गया है। रियल इस्टेट की दुनिया और उसका श्याम पक्ष, विविध पृष्ठभूमि के लोगों का अपार्टमेण्ट में रहना और उनके जीवन के धागे का कमज़ोर सा पड़ना, अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व और उसकी सीमा, आर्ट ऑव लिविंग, निजी विद्यालयों की बढ़ती शक्ति और उसका वर्चस्व आदि पर विविध पात्रों और घटनाओं के माध्यम से लेखिका ने सफलतापूर्वक हमारे समक्ष रखा है। एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि उपन्यास में विस्तार की ज़्यादा संभावना होती है पर लेखिका ने यथोचित और उपयुक्त विस्तार ही लेने को उचित समझा है। इस उपन्यास के संवाद हमारे आस-पास के जीवन में मिलने वाला संवाद है। परिवेश, पात्र और परिदृश्य के अनुरूप पात्र हैं। पात्रों की भाषा, संवाद, मुहावरे भी सहज-स्वाभाविक से हैं। एक पार्क में लगातार मिलना और वहीं से कहानी का आगे बढ़ना और जीवन की राह पर तेज कदमों से भागती हुई स्त्री बहुत कुछ कह जाती है। उपन्यास के आखिरी हिस्से से यह पता चलता है कि हमारे दामपत्य जीवन की डोर उतनी कमजोर नहीं होती जितनी कि आमतौर पर कहा-सुना जाता है। हमारे रिश्तों की गहराई सामान्य तौर पर नहीं दिखती है पर इस तरह की घटनाएँ उन गहराईयों को सामने ला देती है। वर्जनाएँ इस बात का जोरदार संकेत करती हैं कि खोखलापन मज़बूत हो रहा है पर वास्तव में ऐसा होता नहीं है। यह समकालीन वैश्वीकरण के तीव्र परिवर्तन वाले दौर में हमारी सांस्कृतिक उपलब्धि ही कही जा सकती है।

इस उपन्यास के संवाद काफी हद तक प्रभावशाली हैं। कुछ बानगी जरूरी है। अंततः हम सब अपने आप में कहीं न कहीं अधूरे हैं... से स्वीकार कर लेते हैं (पृ0. 9), मैं बस एक मौका हूँ जिसे वे पूरी तरह भुना लेना चाहते (पृ. 16), पुरूष दिखावे में जल्द आ जाया करता है (पृ. उल्टा रास्ता बहुत सीधा है (पृ. 12). उनके लिए तो 23). वैसे भी गुरू उस उज्ज्वल स्थान का प्रतीक है जो ज्ञान, मार्गदर्शन और उर्जा का स्रोत है (पृ.112). अति महात्वाकांक्षा इंसान को ज़हनी तौर पर बीमार कर देती है और अंजाम खतरनाक होता है (पृ. 140) इन सब सवालों से सबसे उपर तुमने अपने स्त्री होने के मान को भी अपमानित किया (पृ. 140) इत्यादि । उपन्यास में लेखिका ने जिस भाषा में अपनी बात रखी है वह सहज है, पात्र और परिवेश के अनुकूल

है। लेखिका ने कहीं भी अनावश्यक विस्तार या चर्चा को नहीं रखा है। जो चर्चा है वह भी सामान्यीकरण या उपसंहार की तरह ही है, यह अच्छा है। इस उपन्यास में आधुनिक औद्योगिक समाज में जो व्यावसायिक गतिशीलता है, पारिवारिक संरचना है, एक तरह का अलगाव है, अमानवीकरण है, बढती हुई तार्किकता के द्वारा भावना को स्थानापन्न कर दिया जाना है उसे हम विविध पात्रों के माध्यम से समझ सकते हैं। दिव्या, सिया, आकाश, अवनी, शकुंतला, शर्मा अंकल, जडेजा भाभी, नेगी अंकल, चोपड़ा आंटी, ऋतु, हेमंत भाई आदि विविध पात्रों के माध्यम से हम आधुनिक शहरी जीवन के विविध रंग से परिचित हो सकते हैं। विविध तरह की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के मध्य भी एक तरह का जीवन जो शाश्वत मूल्यों से सम्बद्ध है, उसका बिखराव सहज ही किसी के द्वारा महसूस किया जा सकता है। गुरू, आर्ट ऑव लिविंग और उत्कर्ष योग के सम्बन्ध में लेखिका ने विशेष तौर पर लिखा है जिससे यह पता चलता है कि मानवीय जीवन को उच्चस्तर की तरफ जाना ही हमारी नियति होनी चाहिए। हमारा विचलन आरम्भिक तौर पर हमारे लिए, बाद में समाज के लिए घातक होता है। एक पुरानी हिन्दी फिल्म है गृहप्रवेश उसकी नायिका अपना घर बचा लेती है। यहां भी अंततः घर बच जाता है। यह एक सुखद संदेश है। समापन हमारे कौतुहल की दिशा के विपरीत होता है पर यह सुखद है। कोई भी कृति हमेशा ही विविध तरह की संभावना से भरी होती है, यह कृति भी है। यह संभव था कि अगर यह कृति थोड़ी बड़ी होती तो स्पर्श किये गये विषय को और बारीकी से हमारे समक्ष रखती। उसके दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय पहलूओं को तब ज्यादा स्थान मिलता पर जितना इसका विस्तार है उसमें यह कृति सराहनीय है।

पुस्तक की छपाई अच्छे कागज पर है। सामान्य तौर पर मुद्रण संतोषजनक है। इस पुस्तक की कीमत निःसंदेह थोड़ी सी अधिक है।

प्रो. रवि कुमार मिश्र,
समाजशास्त्र विभाग, नागरिक स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, जंघई, जौनपुर (उ.प्र.)
मो. 7376537735

समीक्षा

अमीरन - स्त्री मन और हमारे समय से सरोकार रखती कृति

कमलेश चौधरी

एकता अमित व्यास का लिखा हुआ उपन्यास अमीरन एक औरत की मनोदशा और खुद को पाने की जद ओ जहद का जीवंत दस्तावेज है । आत्मकथात्मक शैली और उत्तम पुरुष में लिखा गया उपन्यास अमीरन एक ऐसी अमीर महिला को केंद्र में रख कर लिखा गया है जो खूब दौडती है पसीना बहाती है कसरत करती है । दूसरी महिला जो कथा की सूत्रधार है वह उसका नाम नही जानती । पर बहुत कीमती कार में चलने के कारण उसे अमीरन नाम दे देती है। वह अमीरन से बात करती है तो संकुचित रहने वाली अमीरन अपने जीवन की व्यथा उसके सामने खोलती है।

अमीरन की बेटी की शिक्षिका दिव्या उसके घर टयूशन पढ़ाने के बहाने घुसपैठ करती है । दिव्या और उसकी माँ दोनों शातिर और धूर्त हैं। भोले भाले सरल आकाश को इस तरह अपने मकड़ जाल में फंसाती हैं कि वो सोच भी नही पाता कि उसके साथ ये हो क्या रहा है। अमीरन का घर धीरे-धीरे पूरी तरह दिव्या और उसकी माँ के नियंत्रण में आ जाता है। यहाँ तक कि उसकी बेटी भी माँ की जगह दिव्या मैम को तरजीह देने लगती है।

अमीरन के विरूद्ध दिव्या की भाभी भी षडयंत्र में शामिल हो जाती है । उसका दिमाग इस तरह चकराता है कि वह ये भी नहीं समझ पाती कि कौन उसका भला चाहता है और कौन ऐसे समय में जय भाई और पूर्वी भाभी उसका संबल बनते हैं जो उनके पारिवारिक मित्र हैं।

दिव्या का परिवार धूर्तता की नयी मिसाल कायम करता है। अमीरन अवसाद में चली जाती है । उसे लगता है कि वह पागल हो जाएगी ये परिस्थिति दिव्या को सूट करती है । अमीरन की मनोदशा डगमग हो चुकी है । वह अपने को व्यवसिथत नही कर पा रही है तभी एक ऐसी घटना घटती है कि दिव्या के मुंह से उसकी सच्चाई सबके सामने आ जाती है।

अमीरन की आँखों के आगे छाया कोहरा हट जाता है और वह योग प्राणायाम के सहारे खुद को सामान्य करने में जुट जाती है। उसका खोया आत्म विश्वास लौटने लगता है।

एकता अमित व्यास

उपन्यास रोचक और पठनीय है। भाषा इतनी सरल है कि आप इसे थोड़े समय में पढ़ सकते हैं।

मैं इस उपन्यास की तुलना मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास हमजाद से कर सकती हूँ । उसका एक पात्र टोपनदास है जो हद दरजे का कमीना और घटिया है।

दिव्या और उसका परिवार भी टोपनदास जैसा है।

एक समीक्षक के रूप में मैं इस उपन्यास को संपूर्ण मानती हूं। कुछ भी जमा या घटा करना संभव नही है। अब कुछ कमज़ोर बिंदू भी हैं जिन पर चर्चा कर ली जाए पहली बात अमीरन पढ़ी-लिखी है। अपनी जिम्मेदारी बखूबी समझती है तो उसे इतना कमज़ोर नहीं होना चाहिए कि एक औसत बुद्धि वाली छपरी टाईप औरत उसके घर में इतने अंदर तक घुस कर उसकी निजी ज़िंदगी को तबाही के कगार तक ले आए।

दूसरा कमजोर बिंदू आकाश का चरित्र है जो दिव्या की चाल तो नही समझता, मगर उसकी मन मर्जी भी नहीं चलने देता इतना सयझदार आदमी अपनी पत्नी को ये विश्वास नही दिला पाता कि वह एक ज़िम्मेदार पति के रूप में अपनी गृहस्थी को छिन्न-भिन्न नही होने देगा बाकि उपन्यास रोचक और पठनीय है।

आजकल पुरुष महिला दोनो ही साथ काम करते हैं नौकरी भी साथ-साथ करते हैं । ऐसे में कई बार भावनात्मक संबंध हो जाते हैं, ये संबंध भी बने रहे। संबंधों की गरिमा और मर्यादा को न भूलें।

नयी पीढ़ी के पाठकों के लिए इस उपन्यास में बेहतरीन सबक भी हैं अमीरन।

–बाबेन, कुरूक्षेत्र, मो. 9813446370

कादम्बरी संस्था जबलपुर का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम

पुस्तक मेला गाँधीधाम का उद्घाटन समारोह

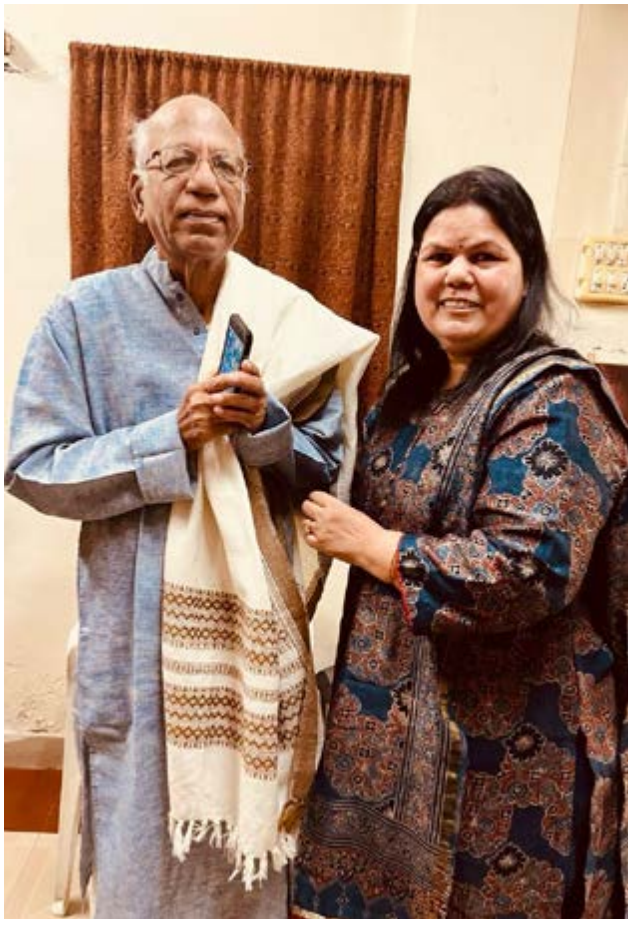

प्रख्यात लेखक श्री राजेन्द्र चंद्रकांत रहा जी एवं उनकी धर्मपत्नी के साथ लेखिका एकता अमित व्यास

'दून दस्तावेज़' के पुस्तक के विमोचन पर एकता अमित व्यास

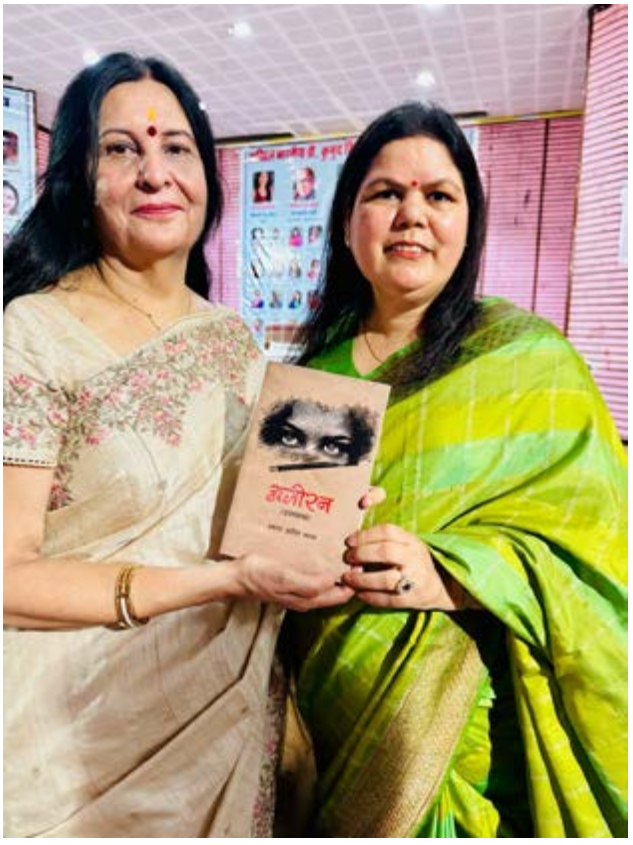

श्रीमती नीलिमा टिक्कू जी के साथ

प्रख्यात लेखक श्री विजय कुमार तिवारी जी के साथ

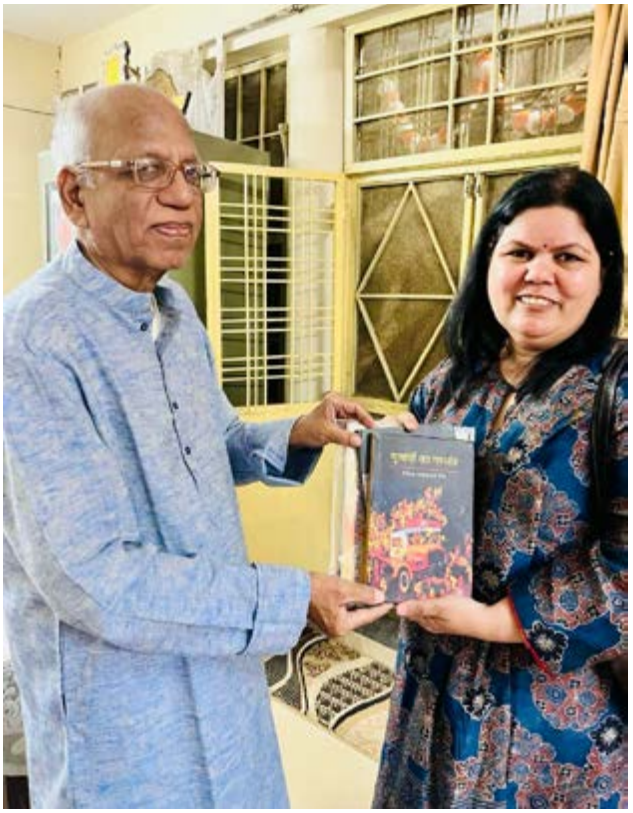

प्रख्यात लेखक श्री राजेन्द्र चंद्रकांत जी को पुस्तक भेंट करते हुए

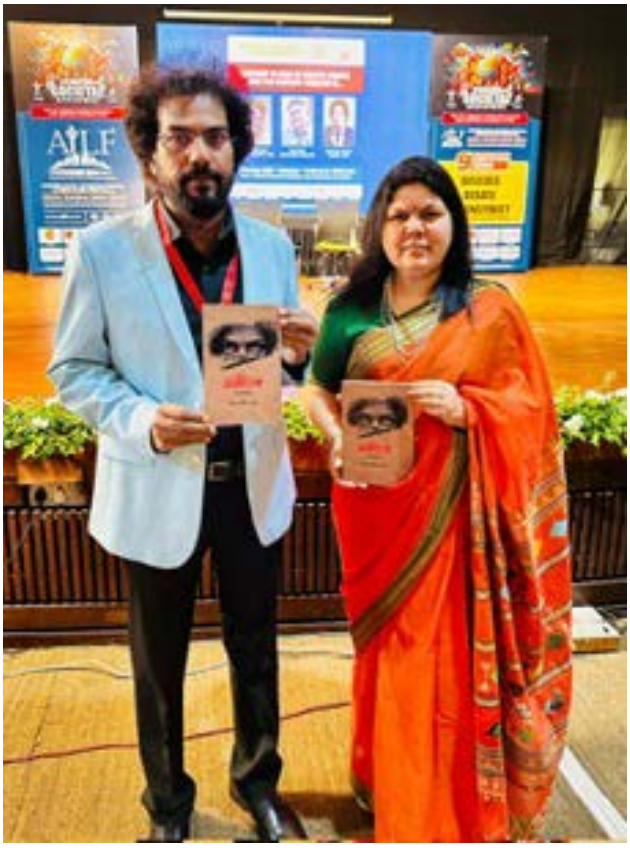

अहमदाबाद लिटरेचर फेस्टिवल कार्यक्रम

नारी अस्मिता बडोदरा पुरस्कार वितरण कार्यक्रम

नारी अस्मिता बडोदरा पुरस्कार वितरण कार्यक्रम

बड़ोदरा में नारी अस्मता पत्रिका विशेष समारोह

आर्ट ऑफ़ लिविंग गाँधीधाम गुरु पूर्णिमा अमीरन पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
ह्यूमन इंडिया

कर्म से तपोवन तक परिचर्चा ने गर्मी को पछाड़ा

ह्यूमन इंडिया/ब्यूरो

गुरुग्राम। अंतरराष्ट्रीय विश्व मैत्री मंच दिल्ली इकाई के द्वारा दिनाँक 2 जून 2024 को संध्या 4 बजे अंतरराष्ट्रीय विश्व मैत्री मंच की संस्थापिका, अध्यक्ष और वरिष्ठ साहित्यकार संतोष श्रीवास्तव की पुस्तक कर्म से तपोवन तक पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी अकादमी, दिल्ली के उप सचिव ऋषि कुमार शर्मा ने की। सुरुचि साहित्य कला परिवार के संस्थापक महासचिव, वरिष्ठ साहित्यकार मदन साहनी मुख्य अतिथि की भूमिका में थे और वरिष्ठ साहित्यकार, पत्रकार और प्रकाशक देवेन्द्र बहल एवं डॉ. वन्दना शर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन थे। अतिथि वृन्द द्वारा माँ शारदे के समक्ष दीपदान से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। नीलम दुग्गल नरगिस ने सुमधुर गायन से सरस्वती वन्दना प्रस्तुत की। मंचासीन अतिथियों का स्वागत सभी को श्रीफल और पुस्तक से किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में दिल्ली इकाई की निदेशक डॉ. दुर्गा सिन्हा ने संस्था का परिचय दिया। तत्पश्चात एकता अमित व्यास की पुस्तक अमीरन का विमोचन हुआ।

सर्वप्रथम संतोष श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक कर्म से तपोवन तकका परिचय देते हुए कहा कि महाभारत के उद्योग पर्व की एक संक्षिप्त पंक्ति तक पुस्तक की समीक्षा डॉ. प्रमिला वर्मा एवं एकता अमित व्यास ने प्रस्तुत की। पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए एकता अमित व्यास ने लेखिका से कुछ अनुत्तरित प्रश्नों का जवाब माँगा और एक जिज्ञासु पाठक एवं प्रखर आलोचक की भूमिका का बखूबी निर्वहन किया। डॉ. प्रमिला वर्मा ने पुस्तक की विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत की, जिसने उपस्थित सुधि साहित्यकारों को पुस्तक पढ़ने की लालसा से भर दिया। एकता अमित व्यास ने अपनी पुस्तक की भूमिका और उसके प्रकाशन से सम्बंधित जानकारी बहुत ही रोचक अंदाज में साझा की। उनकी पुस्तक अमीरन पर डॉ. रेणु ने अपनी बात कही। मुख्य अतिथि मदन साहनी ने अपने वक्तव्य में प्रेम का विशद स्वरूप बताते हुए उसे दैहिक आकर्षण से भिन्न बताया और कर्म से तपोवन के विषय में अपने विचार रख सभी श्रोताओं को मंत्र-डॉ वंदना ने भी पुस्तक पर अपने विचार साझा किए। अध्यक्ष ऋषि कुमार शर्मा का अध्यक्षीय भाषण बहुत ही प्रेरक था,जिसमें उन्होंने नयी पीढ़ी को हिन्दी एवं हिन्दी साहित्य से जुड़ने का परामर्श भी दिया और बताया कि कर्म से तपोवन पढ़ने पर आप पाएंगे कि सूत्र वाक्य में प्रश्न करते हुए संतोष ने बहुत कुशलता से समाधान भी प्रस्तुत किया है।अतएव यह पुस्तक आज के परिप्रेक्ष्य में पढ़ी जाएगी और अपना स्थान भी बनाएगी।

अंतरराष्ट्रीय विश्व मैत्री मंच दिल्ली इकाई की अध्यक्ष शकुंतला मित्तल के कुशल निर्देशन एवं सधे हुए संचालन ने कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए। कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ कवयित्री वीणा अग्रवाल ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के बाद संतोष श्रीवास्तव ने युवा कवि हेमन्त की स्मृति में केक काट कर सभी को भाव-विभोर कर भावपूर्ण बना दिया। इस कार्यक्रम की सफलता में दिल्ली इकाई की महासचिव अर्चना पांडेय और संरक्षक वरिष्ठ साहित्यकार डॉ शुभ्रा, कार्नेलिया कौटिल्या एवं एकता अमित व्यास की पुत्री का विशेष योगदान रहा। अंतर्राष्ट्रीय विश्व मैत्री मंच, दिल्ली इकाई की सक्रियता, कार्यशैली और आयोजन की संतोष श्रीवास्तव ने प्रशंसा और सराहना की।

इस अवसर पर डॉ सविता चड्डा, डॉ कल्पना पांडेय, शारदा मित्तल, वीणा अग्रवाल, रेणु मिश्रा, सविता स्याल, रानी श्रीवास्तव, संतोष संप्रीति, लता ठाकुर, अंजू दुआ जैमिनी, नीलम दुग्गल नरगिस, डॉ वनिता शर्मा, डॉ अंजना, अर्चना उपाध्याय, डॉ जेनी शबनम, अमित व्यास सहित अनेक प्रतिष्ठित वरिष्ठ साहित्यकारों ने दिल्ली, गाजियाबाद, मुरादाबाद नौएडा, गुरुग्राम, फरीदाबाद और पालम, भोपाल, कच्छ से उपस्थिति दर्ज कराई।

लेखिका एकता अमित व्यास की अन्य समाजिक गतिविधियाँ

always
around
does
help

"कहानी में कुछ ऐसा था,
कि दिल को रुलाया भी, हंसाया भी।"

साहित्य नंदिनी

इकाई का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय विश्व

अंतर्राष्ट्रीय विश्व

अंतर्राष्ट्रीय

अंतर्राष्ट्रीय विश्व

जलसा–ए–'अमीरन'

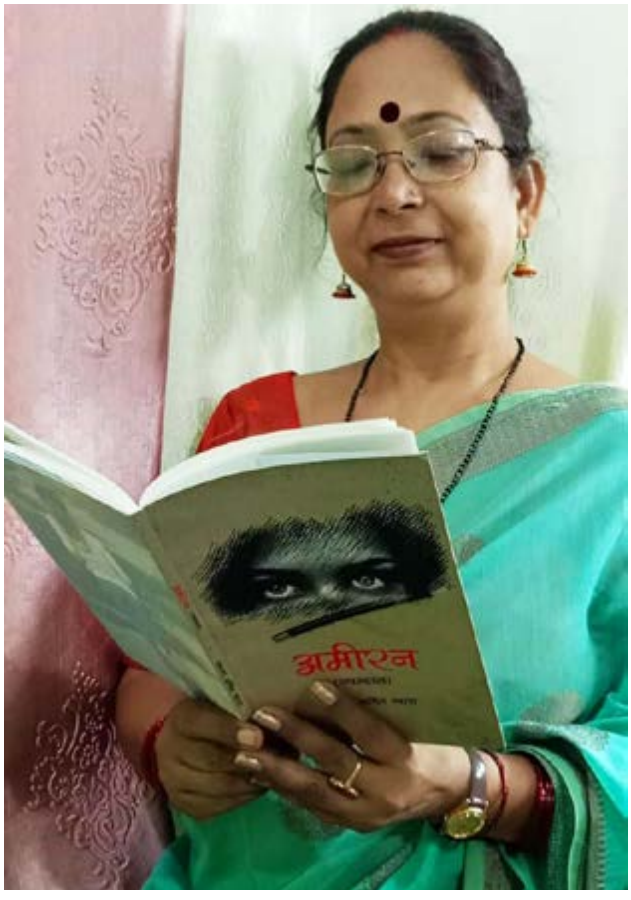

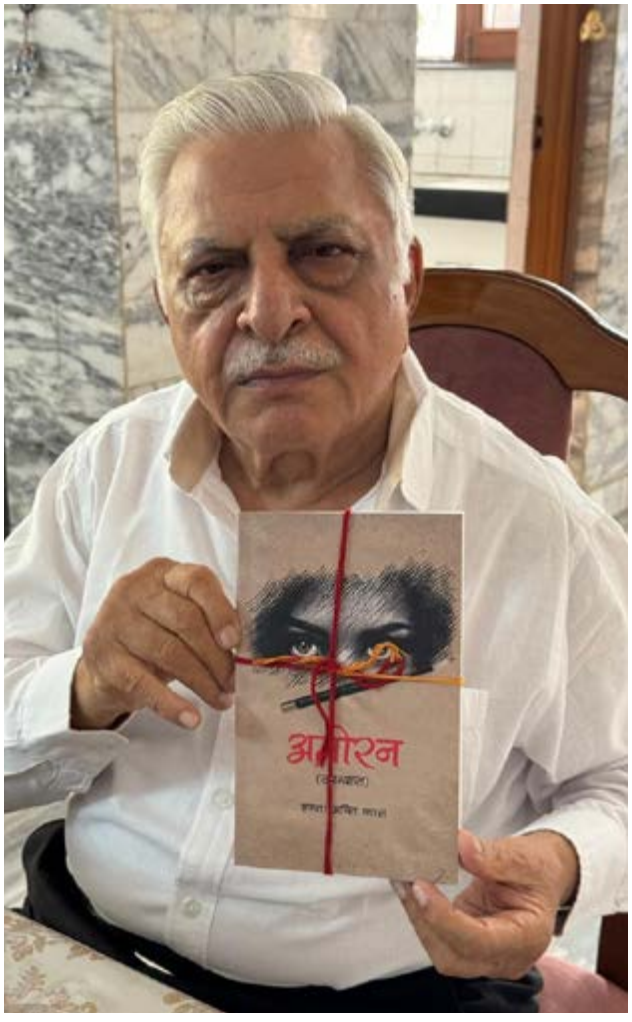
अमीरन

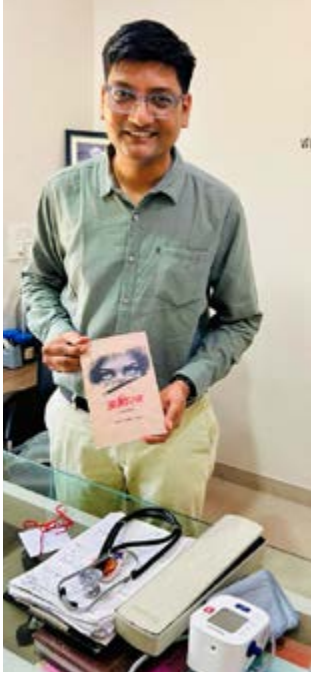

अमीरन

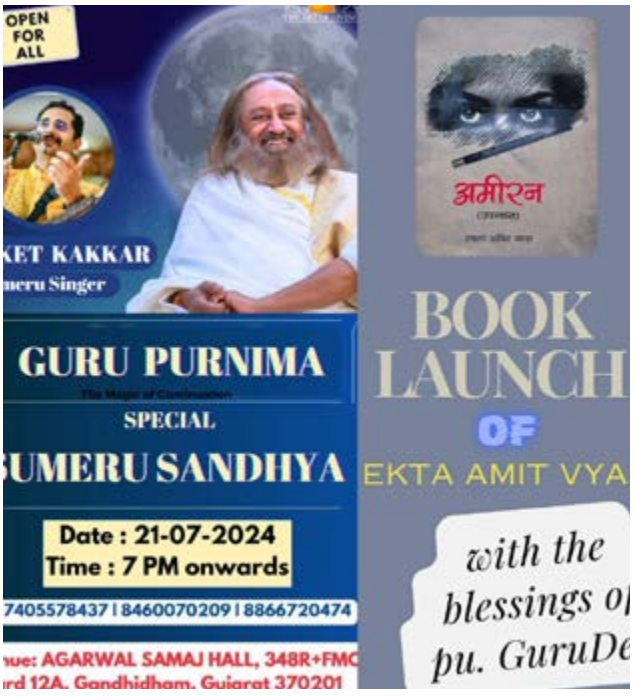

OPEN FOR ALL
GURU PURNIMA
SPECIAL
Date : 21-07-2024
Time : 7 PM onwards
7405578437 | 8460070209 | 8866720474

अमीरन
BOOK LAUNCH
OF

अमीरन
(उपन्यास)
एकता अमित व्यास

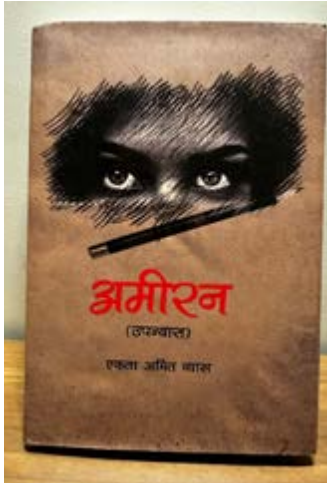

"हमारे अंदर अज्ञान से जमे हिमखंड को तोड़ने के लिए पुस्तक एक कुठार है।"
अमीरन

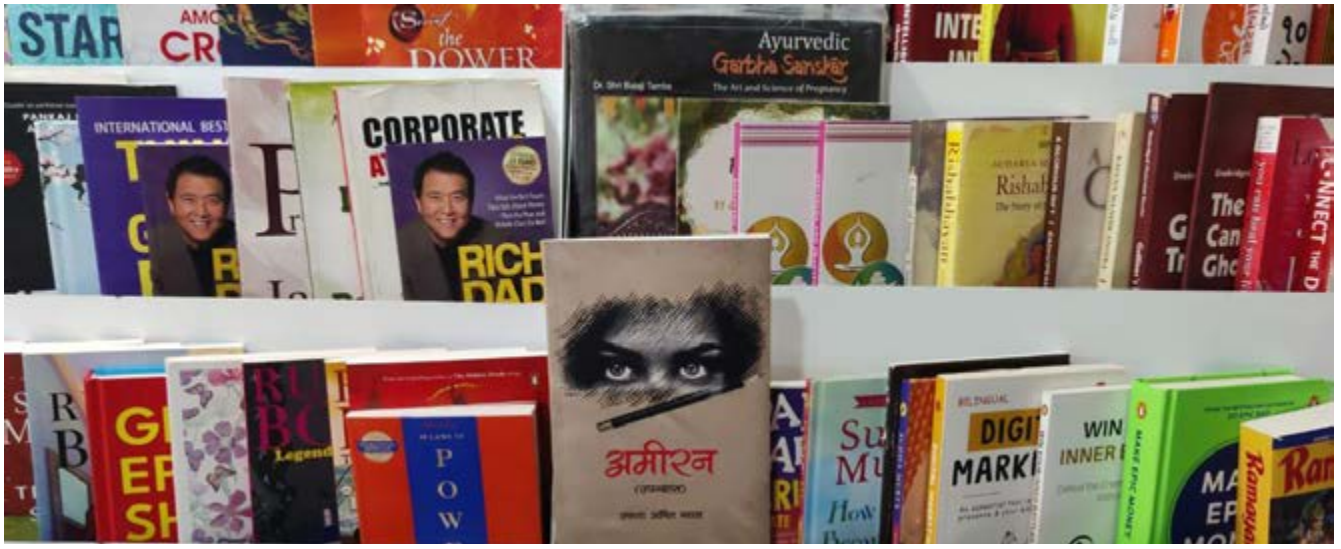

अमीरन
(उपन्यास)
एकता अमित व्यास

Ayurvedic
Garbha Sanskar
CORPORATE
अमीरन

अंतर्राष्ट्रीय विश्व मैत्री मंच दिल्ली इकाई
पुस्तक चर्चा: कर्म से तपोवन तक
लेखिका संतोष श्रीवास्तव
कृति विमोचन :अमीरन
लेखिका एकता अमित व्यास
अमीरन
अध्यक्ष : डॉ. दीपक पाण्डेय
मुख्य अतिथि : मदन साहनी
विशिष्ट अतिथि : देवेंद्र बहल
एवं
डॉ. वन्दना शर्मा
समीक्षक: डॉ. प्रमिला वर्मा
एवं
एकता अमित व्यास
संस्था का परिचय- डॉ दुर्गा सिन्हा
संचालन- शकुंतला मित्तल
सरस्वती वंदना- नीलम दुग्गल "नरगिस"
आभार - वीणा अग्रवाल
स्थान : हैण्डलूम हाट,जनपथ
रविवार 2 जून, संध्या 4 बजे
कार्यक्रम संयोजक
डॉ शुभ्रा
आप सभी सादर आमंत्रित हैं

अमीरन

अमीरन

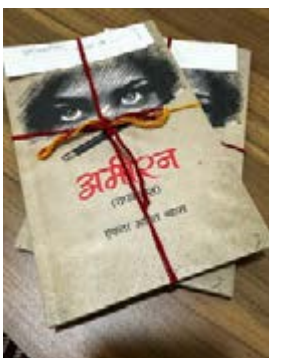
अमीरन

पुस्तक
से तपोवन तक

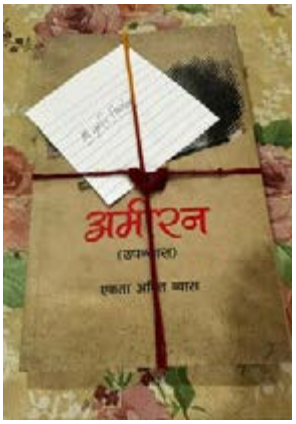
अमीरन
(उपन्यास)
एकता अमित व्यास

अमीरन
(उपन्यास)
एकता अमित व्यास

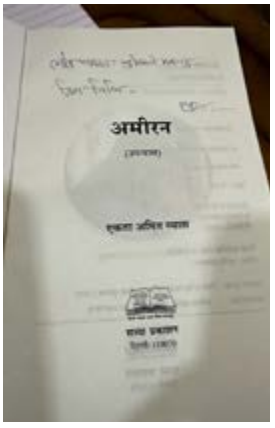
अमीरन
एकता अमित व्यास

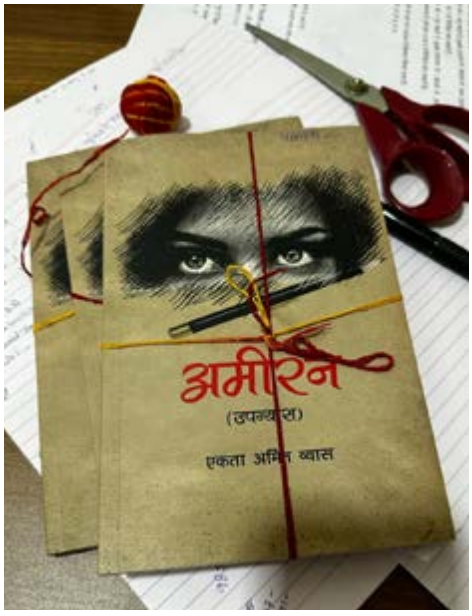
अमीरन
(उपन्यास)
एकता अमित व्यास

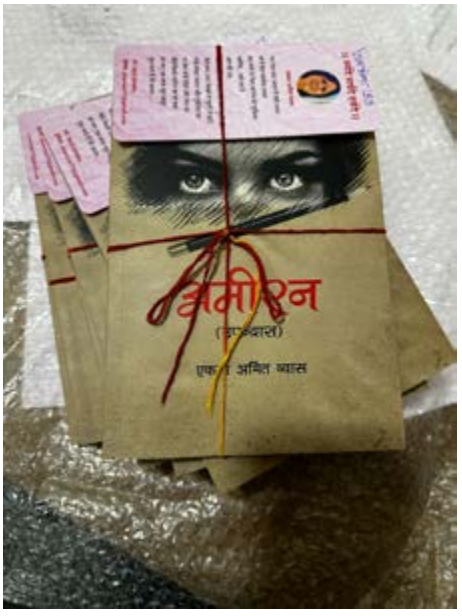
अमीरन
(उपन्यास)
एकता अमित व्यास

मातृ दिवस पर माँ को समर्पित नया उपन्यास
अमीरन
(उपन्यास)
एकता अमित व्यास
claim your copy now !!!

"हमारे अंदर अज्ञान से जमे हिमखंड को तोड़ने के लिए पुस्तक एक कुठार है।" -काफ्का

समीक्षा,संवाद और सूचनाओं की

साहित्य नंदिनी

वर्ष-6, अंक-06, जून 2024 RNI No. DELHIN/2017/74713/19-02-18

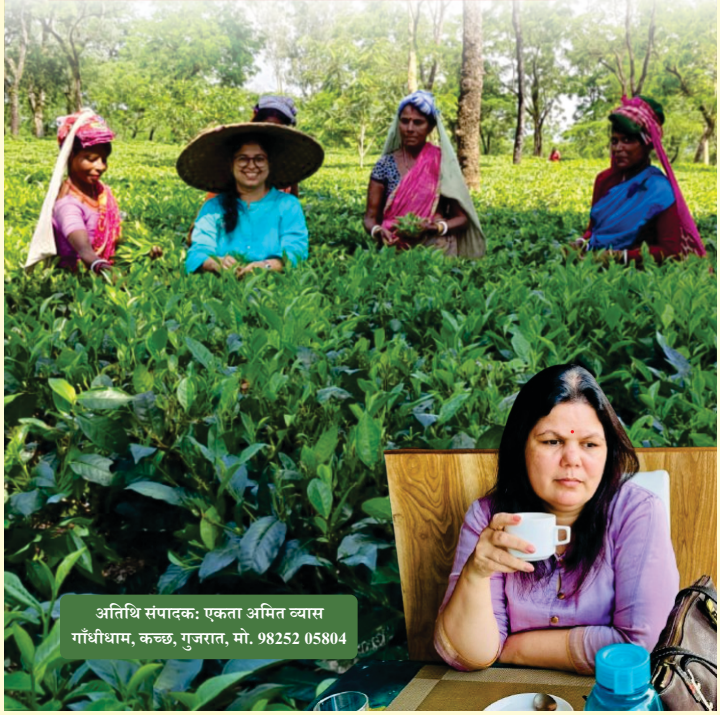

पेपरबैक :-450/-सजिल्द :-550/-
उपलब्ध है नीचे दिये गये QR कोड पर

इस ख़रीद फ़रोख़्त की दुनिया में अगर किसी चीज़ की बिक्री में सबसे ज़्यादा कमी आयी है तो वो है किताबें, और हिन्दी किताबें।

मेरे कई सालों के प्रकाशन के अनुभव में ऐसा कभी नहीं हुआ कि किताब छपने के पहले ही पूरी तरह से बुक हो जाए।

इस उम्र में मेरी बूढ़ी आँखों को ये करिश्मा देखना भी मेरे भाग्य में लिखा था।

अति उत्साह के साथ आप सभी के साथ ये ख़बर साझा कर रहा हूँ की "अमीरन" रिश्तों के उतार चढ़ाव और अर्बन समस्याओं पर आधारित (जो कि लेखिका एकता अमित व्यास का पहला उपन्यास है) का दूसरा संस्करण उपलब्ध है नई साज सज्जा के साथ।

'अमीरन' के पुस्तक विमोचन पर लेखिका एकता अमित व्यासए डॉ. रेनू यादव एवं जेनी शबनम के साथ

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक देवेन्द्र कुमार बहल द्वारा डेकोरपैक इंडिया प्रा. लि., 291डी, सेक्टर 6, आई.एम.टी., मानेसर, गुड़गाँव (हरियाणा) से मुद्रित, बी-3/3223, वसंतकुंज, नई दिल्ली 110070 से प्रकाशित किया। -संपादक : देवेन्द्र कुमार बहल

बढ़ते क़दमों को चूम लेती है मंज़िले-मक़सूद